शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मध्यप्रदेश के औद्योगिक विकास में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान की भूमिका : एक अध्ययन (विगत 10 वर्षों के विशेष सन्दर्भ में 2006-07 से 2015-16 तक)

डॉ. हेमा मिश्रा (सहा. प्राध्यापक, वाणिज्य)
श्री क्लॉथ मार्केट कन्या वाणिज्य महाविद्यालय, इंदौर
डॉ. आशीष पाठक (प्राध्यापक, वाणिज्य)
श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इंदौर)
सुश्री दिव्या शर्मा (शोधार्थी)
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

मध्यप्रदेश सरकार राज्य के तीव्र औद्योगिक विकास हेतु विगत 10 वर्षों से सतत् रूप से प्रयासरत है जिसके परिणामस्वरूप प्रदेश में औद्योगिक विकास को नई गति मिली है। राज्य सरकार ने न केवल स्व-रोजगार स्थापित करने में आने वाली समस्याओं और चुनौतियों को समझा है वरन् प्रदेश में इन उद्योगों कोप्रोत्साहन देने हेतु अनेक कदम भी उठाये हैं। किसी भी राज्य के औद्योगिक विकास में उस राज्य में औद्योगिक विकास हेतु कार्यरत संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसी कारण से मध्य प्रदेश में कई ऐसे संस्थानों की स्थापना की गयी है जो राज्य के औद्योगिक विकास में तीव्रता से वृद्धि करने में सहायता प्रदान करते हैं। इन्हीं संस्थानों में से एक है 'सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान', जिसकी स्थापना का उद्देश्य मध्यप्रदेश में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों को प्रोत्साहित कर सामाजिक-आर्थिक विकास करना तथा रोजगार के अवसरों में वृद्धि करना है।अतः प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीयक समंकों के अध्ययन द्वारा विगत दस वर्षों में मध्यप्रदेश में हुए औद्योगिक विकास में मध्यप्रदेश सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान की क्या भूमिका रही इस तथ्य पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द - *मध्यप्रदेश, औद्योगिक विकास, सूक्ष्म,लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान*

प्रस्तावना

मध्यप्रदेश सरकार राज्य के तीव्र औद्योगिक विकास हेतु विगत 10 वर्षों से सतत् रूप से प्रयासरत है, जिसके परिणामस्वरूप प्रदेश में औद्योगिक विकास को नई गति मिली हैतथा राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में द्वितीयक क्षेत्र (उद्योग) का योगदान तीव्रता से बढ़ा है। राज्य सरकार ने न केवल स्व-रोजगार स्थापित करने में आने वाली समस्याओं और चुनौतियों को समझा है वरन् प्रदेश में इन उद्योगों को प्रोत्साहन देने हेतु अनेक कदम भी उठाये हैं। राज्य में औद्योगिक विकास और निवेश वृद्धि करने हेतु कई नई नीतियों का निर्माण किया गया हैं। सरकार अलग-अलग नीति बनाकर तथा प्रावधान कर उद्यमियों की राह आसान करने और सफल बनाने में पूरी गंभीरता से प्रयासरत है। किसी भी राज्य के औद्योगिक विकास में उस राज्य में औद्योगिक विकास हेतु कार्यरत

संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसी कारण से मध्य प्रदेश में कई ऐसे संस्थानों की स्थापना की गयी है जो राज्य के औद्योगिक विकास में तीव्रता से वृद्धि करने में सहायता प्रदान करते हैं। इन्हीं संस्थानों में से एक है 'सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमविकास संस्थान', जिसकी स्थापना का उद्देश्य मध्यप्रदेश में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों को प्रोत्साहित कर सामाजिक-आर्थिक विकास करना तथा रोजगार के अवसरों में वृद्धि करना है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

औद्योगिक विकास हेतु मध्यप्रदेश सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान की भूमिका का अध्ययन करना।

विगत 10 वर्षों में मध्यप्रदेश में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों के विकास का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोधपत्र में मध्यप्रदेश के औद्योगिक विकास में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान की भूमिका का अध्ययन करने हेतु द्वितीयक समंकों का प्रयोग किया गया है। इस हेतु मध्यप्रदेश सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान के वार्षिक प्रतिवेदन एवं औद्योगिक विकास से सम्बन्धित पुस्तक-पुस्तिकाएं शोधपत्र, आलेख एवं वेबसाइट्स आदि से जानकारी प्राप्त की गयी है।

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय का परिचय - सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय (एम.एस.एम.ई) व्यापक रूप से न्यायसंगत आर्थिक विकास को बढ़ावा देने वाले ईंजन के रूप में जाना जाता है। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम क्षेत्र पिछले पांच दशकों में भारतीय अर्थव्यवस्था का एक बेहद जीवंत और गतिशील क्षेत्र के रूप में उभरा है। एम.एस.एम.ई- न केवल बड़े उद्योगों की तुलना में अपेक्षाकृत कम पूंजी लागत में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, बल्कि ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों के औद्योगीकरण में भी सहायता करते हैं और इस प्रकार से क्षेत्रीय असंतुलन को कम करते हुए राष्ट्रीय आय और धन के अधिक समान वितरण को सुनिश्चित करने का भी आश्वासन देते हैं। एम.एस.एम.ई सहायक इकाइयों के रूप में बड़े उद्योगों के पूरक हैं और देश के सामाजिक-आर्थिक विकास में भी इस क्षेत्र का बड़ा योगदान है। इस प्रकार भारतीय एम.एस.एम.ई- क्षेत्र राष्ट्रीय आर्थिक ढांचे की रीढ़ है।

मध्यप्रदेश में एम.एस.एम.ई विकास संस्थान की स्थापना विकास आयुक्त, एम.एस.एम.ई मंत्रालय, भारत सरकार के एक क्षेत्रीय कार्यालय के रूप में वर्ष 1954 में की गयी, जिसका उद्देश्य मध्यप्रदेश में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों को प्रोत्साहित कर सामाजिक-आर्थिक विकास करना तथा रोजगार के अवसरों में वृद्धि करना है। एम.एस.एम.ई डी.ओ. एक ऐसी शीर्ष संस्था है, जो एम.एस.एम.ई के विकास हेतु नीतियों का निर्माण करती है तथा एम.एस.एम.ई के विकास हेतु प्रोत्साहन गतिविधियाँ अपने व्यापक नेटवर्क के माध्यम से संचालित करती है। मध्यप्रदेश में एम.एस.एम.ई विकास संस्थान इंदौर में है। इसकी अधिनस्थ दो शाखाएं रीवा तथा ग्वालियर में है तथा इसका परीक्षण केंद्र (फिल्ड टेस्टिंग सेंटर) भोपाल में स्थित है। एम.एस.एम.ई डी.आई. इंदौर सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम क्षेत्रों के उद्योगों को व्यापक सुविधाएँ प्रदान करता है, जिसमें उद्यमिता विकास हेतु परीक्षण व प्रशिक्षण, तकनीकी और प्रबंधकीय परामर्श,

परियोजना व उत्पाद की प्रोफाइल तैयार कराना तथा मध्य प्रदेश से सम्बन्धित आर्थिक जानकारी प्रदान करना शामिल है।

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान की स्थापना के मुख्य उद्देश्य -

- राज्य में औद्योगीकरण करना तथा एम.एस.एम.ई उद्योगों का विकास करना।
- राज्य की सामाजिक व औद्योगिक अर्थव्यवस्था के उत्थान हेतु निवेश आकर्षित करना।
- उद्योगों के विकास हेतु उद्योग मित्र नीतियाँ व अनुकूल माहौल बनाना।
- राज्य के उद्योगों को सुदृढ़ता प्रदान कर उन्हें वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा में टिकने हेतु सक्षम बनाना।
- स्वरोजगार के माध्यम से रोजगार के अवसरों में वृद्धि करना, शिक्षित एवं प्रशिक्षित बेरोजगारों में उद्यमिता कौशल विकसित करना तथा रूग्ण इकाईयों का पुनःप्रवर्तन करना आदि।
- उद्योग व अन्य एजेंसियों तथा अधिनियम के मध्य समन्वय स्थापित करना व सहायता करना।
- औद्योगिक विकास हेतु आधारभूत संरचना का निर्माण करना।
- सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमविकास संस्थान द्वारा किये जाने वाले प्रमुख कार्य -
- एम.एस.एम.ई उद्योगों का विकास करने के लिए नीतियों का निर्माण करने हेतु सरकार को परामर्श देना।
- एम.एस.एम.ई उद्योगों को सामान्य सुविधाएँ देना, तकनीकी-आर्थिक व प्रबंधकीय परामर्श देना तथा व्यापक सेवाएँ उपलब्ध कराना, बुनियादी ढांचे का विकास करना, औद्योगिक भूमि का आबंटन करना।
- एम.एस.एम.ई उद्योगों को प्रौद्योगिकी उन्नयन, आधुनिकीकरण, गुणवत्ता सुधार और बुनियादी सुविधाओं से सम्बंधित सेवाएँ प्रदान करना, आर्थिक सूचना सेवाएँ उपलब्ध कराना।
- प्रशिक्षण एवं कौशल उन्नयन के माध्यम से मानव संसाधन विकास करना तथा शिक्षित बेरोजगारों के लिए स्वरोजगार योजनाओं का क्रियान्वयन करना।
- उद्योगों को रियायतें व वित्तीय सहायता प्रदान करना तथा उनके लिए औद्योगिक समूहों व विद्युत करघा क्षेत्र का विकास करना।
- उद्योगों को बढ़ावा देने हेतु व्यवस्थित प्रदर्शनी व सेमिनार का आयोजन करना, वेंडर विकास कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- उद्योगों व सम्बंधित विभागों/एजेंसियों के मध्य समन्वयक की भूमिका अदा करना।
- उन सूक्ष्म उद्योगों को जिन्हें डिफाल्टर इकाईयों/सरकारी विभाग या निगमों से किसी भुगतान को प्राप्त करने में दुविधा आ रही हो, तो उन्हें विलम्बित भुगतान की वसूली करने में सहायता करना।
- बीमार उद्योगों का पुनरूद्धार करना।
- मंडल व राज्य स्तर के पुरस्कार से सम्मानित कर प्रोत्साहित करना।
- एम.एस.एम.ई उद्योगों का पंजीकरण करना, उन्हें कच्चे माल की सुविधा उपलब्ध कराना, उनके उत्पाद का विपणन करना आदि।

इस प्रकार एम.एस.एम.ई विकास संस्थान राज्य के औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। इस संस्थान द्वारा विगत 10 वर्षों

में औद्योगिक विकास हेतु दिए गये योगदान का विवरण निम्नानुसार है -

विगत 10 वर्षों में (2006-07 से 2015-16 तक) एम.एस.एम.ई.विकास संस्थान द्वारा मध्यप्रदेश में स्थापित सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग, उनमें विनियोजित पूंजी एवं रोजगार का वर्षवार विवरण

तालिका क्रं 1

वर्ष	संख्या	विनियोजित पूंजी (लाख रू. में)	रोजगार
2006-07	16733	17822.68	38958
2007-08	18582	29827.31	46197
2008-09	20920	36871.84	46891
2009-10	19721	25414.24	41302
2010-11	19856	41316.57	42959
2011-12	20105	47516.50	46501
2012-13	19894	67242.91	47414
2013-14	18660	62049.05	45007
2014-15	19835	75004.10	51571
2015-16	48179	517175.00	194761
कुल	222485	920240.2	601561

स्रोत - सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान, इंदौर की वार्षिक पुस्तिका 'राज्य पार्श्विका' से प्राप्त जानकारी के अनुसार

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करने हेतु उपर्युक्त तालिका क्रमांक 1 के आधार पर यहाँ प्रवृत्ति विश्लेषण तकनीक का प्रयोग किया गया है और इस हेतु वर्ष 2006-07 को आधार वर्ष माना गया है तथा इसके आधार पर विगत 10 वर्षों में हुए औद्योगिक विकास एवं निवेश वृद्धि का आंकलन किया गया है, जिसका विवरण निम्नलिखित तालिका क्रमांक 2 के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है -

विगत 10 वर्षों में (2006-07 से 2015-16 तक) एम.एस.एम.ई.विकास संस्थान द्वारा मध्यप्रदेश में स्थापित सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग, उनमें विनियोजित पूंजी एवं रोजगार का वर्षवार विवरण

तालिका क्रमांक 2

वर्ष	संख्या	विनियोजित पूंजी (लाख रू. में)	रोजगार
2006-07	100	100	100
2007-08	111	167	119
2008-09	125	207	120
2009-10	118	143	106
2010-11	119	232	110
2011-12	120	267	119
2012-13	119	377	122
2013-14	112	348	116
2014-15	119	421	132
2015-16	288	2902	500

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 2 का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि मध्यप्रदेश में विगत 10 वर्षों में सूक्ष्म लघु एवं मध्यम इकाइयों की संख्या, उनमें विनियोजित पूंजी तथा इनके माध्यम से सृजित रोजगार में वृद्धि हुई है। वर्ष 2006-07 की तुलना में वर्ष 2015-16 में स्थापित उद्योगों की संख्या में 288 प्रतिशत,

विनियोजित पूंजी में 2902 प्रतिशत तथा सृजित रोजगार में 500 प्रतिशत वृद्धि हुई है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त तथ्यों का अध्ययन करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि विगत 10 वर्षों में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों का विकास हुआ है तथा औद्योगिक विकासकरने हेतु निवेश करने के लिए विनियोक्ताओं की प्रवृत्तियां सकारात्मक रही हैं और इस कार्य में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान इंदौर की वार्षिक पुस्तिका 'राज्य पार्श्विका' (विगत 10 वर्षों की)

मध्यप्रदेश का आर्थिक सर्वेक्षण (2005-06 से 2016-17)

वेबसाइट्स

http://dcmsme.gov.in/dips/old_dipr.html

www.msmeindore.nic.in

http://mpinfo.org/story/StoryDetails.aspx?StoryID=150810S4&CatId=23